डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

निराला : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

निराला के काव्य में भाषा और संवेदना के अनेक स्तर हैं और अपनी इसी विशेषता के कारण वे सबसे अलग प्रतीत होते हैं। उनका काव्य – संसार उन्हें एक पृथक पहचान प्रदान करता है। उनकी कविता में अनेक स्थानों पर जो उद्विग्नता दिखाई पड़ती है वह अकारण नहीं है। उनकी उद्विग्नता के ठोस सामाजिक तथा सांस्कृतिक आधार हैं। उनके काव्य – संसार में सम – विषम, सहज – जटिल, प्रत्याशित – अप्रत्याशित सभी प्रकार की अभिव्यक्ति है। उनके शब्दों, मुहावरों एवं चित्रात्मक विन्यासों से एक विशेष परिवेश सपनी संपूर्णता में उभरकर पाठकों के समक्ष आकर उपस्थित हो जाता है।

छायावादी कवियों में निराला ऐसे अकेले कवि माने जाते हैं जो जीवन में प्रवेश कर अपनी दृष्टि का निर्माण करते हैं। जीवन के अंतर्विरोधों से निराला कभी घबराते नहीं हैं, वे अंतर्विरोधों के समुच्चय को स्वीकार करते हैं। सुख – दुख, सौंदर्य – उदासी, खिन्नता, निराशा, जिजीविषा, मृत्यु – भय, प्रेम, भक्ति, प्रणय इत्यादि अनेक अवस्थाओं के प्रति वे समता – भाव रखते हैं। निराला के काव्य में विषयगत विविधता एवं शैलीगत नवीनता दिखाई देती है। वे जिस प्रकार जीवन के सभी रूपों को सहजता से स्वीकार करते हैं उसी प्रकार काव्य को भी विविध बहुरंगी स्वरूप प्रदान करते हैं। उनके काव्य – जगत में एक ओर 'जूही की कली' जैसी प्रेम – कविता प्राप्त होती है तो दूसरी ओर 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी प्रगतिवादी कविता मिलती है। 'सरोज स्मृति' कविता उन्हें विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। पुत्री के सौंदर्य का वर्णन करते हुए वे साहित्य के दायरे को बँधे – बँधाए ढर्रे से बाहर निकाल लाते हैं। विविधता उनके काव्य की बहुत बड़ी विशेषता है, उनका मानना है कि मानवता का दायरा सभी भौगोलिक इकाइयों से बड़ा है। राष्ट्र की मुक्ति के लिए निराला 'जागो फिर एक बार' कविता लिखते हैं परंतु वह मानते हैं कि मात्र राष्ट्र की मुक्ति से हमारा लक्ष्य पूरा नहीं होता है। पूर्ण स्वतंत्रता के लिए सामाजिक मुक्ति अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सदैव रूढ़ियों एवं बंधनों का विरोध किया है। विषय वस्तु की व्यापकता, भाव – वैविध्य के साथ – साथ भाषा एवं शिल्प में भी उन्होंने अनेक बंधनों को तोड़कर काव्य को नई ऊंचाई प्रदान की है। 'जूही की कली' की भाषा तत्सम प्रधान होकर भी क्लिष्टता का बोध नहीं कराती अपितु प्रेम की कोमलता को अभिव्यक्त करती है –

"विजन – वन – वल्लरी पर

सोती थी सुहाग भरी – स्नेह स्वप्न – मग्न –

अमल – कोमल – तनुतरुणी – जूही की कली”

देशी शब्दों के प्रयोग की सुंदरता ‘ स्नेह निर्झर बह गया है’ में दिखाई देती है –

“आम की यह डाल जो सूखी दिखी

कह रही है – अब यहाँ पिक या शिखी

नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी

नहीं जिसका अर्थ –

जीवन दह गया है”

जूही की कली तत्सम भाषा के कारण विशिष्ट है तो स्नेह निर्झर बह गया है देशज भाषा के कारण। एक ही समय में लिखी गई रचनाएँ ‘सरोज स्मृति’ ‘राम की शक्ति पूजा’ तथा ‘तुलसीदास’ भाषा के स्तर पर बिल्कुल भिन्न हैं। सरोज – स्मृति में भाषा के विविध रूप द्रष्टव्य हैं। ‘राम की शक्तिपूजा’ की प्रारंभिक अठारह पंक्तियां विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं। इन सभी कविताओं से नितांत भिन्न भाषा ‘कुकुरमुत्ता’ में दिखाई पड़ती है –

“अबे, सुनबे, गुलाब

भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट”

निराला का वैयक्तिक जीवन व रचनात्मक जीवन दोनों ही संघर्षपूर्ण रहे। वे संघर्ष में अनेक बार अव्यवस्थित हुए और हर बार स्वयं को संभाला और निखारा। निराला की रचनात्मक प्रतिभा उनकी रचनाओं में से झाँकती हुई प्रतीत होती है। उनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं – अनामिका, परिमल, गीतिका, अणिमा, तुलसीदास, बेला, कुकुरमुत्ता, नये पत्ते, अर्चना, सांध्य काकली, गीत कुंज, आराधना।

काव्य के अतिरिक्त कहानी संग्रह, उपन्यास, रेखाचित्र, ललित और आलोचनात्मक निबंध, बालोपयोगी साहित्य और अनुवाद कार्य भी हैं। उनके काव्य – संसार की परिधि भी उनके व्यक्तित्व के समान ही विशाल और व्यापक है।